विद्यालङ्कार (B.A. SANSKRIT HONS.) संस्कृत विषय के लिये CBCS आधृत विस्तृत पाठ्यक्रम

विद्यालङ्कार [B.A.(Hons.) Sanskrit]

विषयसम्बद्ध वैकल्पिक पत्र हेतु संस्कृत विषयक विस्तृत पाठ्यक्रम

Detail of the Elective Course for Sanskrit

सत्र- पञ्चम Semester –V

विषयसम्बद्ध वैकल्पिक पत्र	**संस्कृत में रंगमञ्च और नाट्यशास्त्र**	**पूर्णाङ्क -100**
(DSE- Paper)	**Theatre and Dramaturgy in Sanskrit**	**सत्रान्त परीक्षा -70**
Paper Code HSA-E513		**आन्तरिक परीक्षा-30**
		सकल-अर्जिताधिभार 06

पाठ्यक्रम (Course)

खण्ड- क (Section- A) रंगमञ्च : प्रकार और निर्माण

खण्ड- ख (Section-B) नाटक : वस्तु, नेता और रस

खण्ड- ग (Section-C) भारतीय रंगमञ्च की परम्परा और इतिहास

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

नाटक श्रव्य और दृश्य होने के कारण मनोरञ्जन की सभी विधाओं में सर्वोत्तम माना गया है। नाट्यशाला (Theater) का इतिहास भारत में बहुत पुराना है, जिसकी एक झलक ऋग्वेद के सम्वाद सूक्तों में देखी जा सकती है। बाद में नाट्यशास्त्र भरतमुनि के द्वारा विकसित किया गया। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य नाट्य-सौन्दर्य को पहचानना है और भारतीय नाट्य शास्त्र के शास्त्रीय पक्ष के विकास से छात्रों को परिचित कराना है

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र भारतीय नाट्य के विविध पक्षों, आयामों को गहराई से हृदयंगम कर पायेगा।
2. यदि कोई नाट्यकला में प्रवीण छात्र आधुनिक रंगमञ्च के क्षेत्र में अपना भविष्य बनाना चाहे तो उसके लिए यह पाठ्यक्रम नींव का पत्थर बन सकता है।

घटकानुरूप विभाजन(Unit-Wise Division)

खण्ड – क

(Section–A)

रंगमंच : प्रकार और निर्माण

घटक-क (Unit-1) रंगमंच: प्रकार और निर्माण - विकृष्ट (आयताकार) , चतुरस्र (वर्गाकार) , त्र्यस्र (त्रिकोणीय) , ज्येष्ठ (दीर्घ) , मध्यम, अवर (छोटा) , भूमिशोधन, माप, मत्तवारणी (स्तम्भ) , रङ्गपीठ, रङ्गशीर्ष, दारुकर्म , नेपथ्यगृह, प्रेक्षकोपवेश (प्रेक्षागृह) प्रवेश और निर्गम द्वार।

खण्ड –ख

(Section–B)

नाटक : वस्तु, नेता और रस

घटक-क (Unit-1) नाटक की परिभाषा एवं इसके विभिन्न नाम - दृश्य, र ूप, र ूपक, अभिनेय - अभिनय और प्रकार : आङ्गिक, वाचिक, सात्विक, आहार्य। वस्तु और उसके प्रकार (आधिकारिक, प्रासङ्गिक), पञ्च अर्थ प्रकृतियाँ, पञ्च कार्यावस्थाएँ एवं पञ्च सन्धि , अर्थोपक्षेपक। संवाद के प्रकार- सर्वश्राव्य (प्रकाश्य) , अश्राव्य अथवा स्वगत, नियतश्राव्य, जनान्तिक, अपवारित, आकाशभाषित।

घटक-ख (Unit-2) नेता : चार प्रकार के नायक, तीन प्रकार की नायिकाएँ, सूत्रधार,पारिपार्श्विक, विदूषक, कञ्चुकी, प्रतिनायक।

घटक-ग (Unit-3) रस की परिभाषा, रस-निष्पत्ति क े अवयव : भाव, विभाव, अनुभाव, सात्विकभाव, स्थायीभाव, व्यभिचारिभाव, स्वाद। चार प्रकार के मानसिक स्तर : विकास, विस्तार, क्षोभ, विक्षेप।

खण्ड–ग (Section–C)

भारतीय रंगमंच की परम्परा और इतिहास

घटक-क) Unit-1) विभिन्न युगों में रंगमंच की उत्पत्ति और विकास : प ्राग्-ऐतिहासिक, वैदिक युग, महाकाव्य-पौराणिक युग, राज दरबार रंगमंच (court theatre), मन्दिर रंगमंच, खुला रंगमंच, आधुनिक रंगमंच, लोक रंगमंच, व्यावसायिक रंगमंच, राष्ट्रिय और राज्य स्तरीय रंगमंच।

अनुशंसित ग्रन्थ (Suggested Books/Readings)

1. Ghosh , M.M. - Nātyaśāstra of Bharatamuni, pp. 18-32.
2. झा सीताराम, (1982) नाटक और रंगमंच , बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, पृ. 171-175.
3. HSAs , The Daśarūpak: A Treatise on Hindu Dramaturgy, kārika 7,8,11-24,30,36,43,48,57-65.
4. HSAs , The Daśarūpak: A Treatise on Hindu Dramaturgy, kārikās 2/1-5,8,9,15.
5. HSAs , The Daśarūpak: A Treatise on Hindu Dramaturgy, kārikās 4/1-8,43,44.
6. त्रिपाठी, राधावल्लभ (सं०) संक्षिप्त नाट्यशास्त्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2008